Introduction

-:: प्राक्कथन ::-

आज भी मैं अपने छात्र जीवन की उन सुखद स्मृतियों के मधुर क्षणों को विस्मृत नहीं कर पाती हूं, जब मैंने पहली बार महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" की कुछ कविताओं को आत्मसात होकर पढ़ी थीं। मैं उनमें जैसे डूब सी गयी थी। क्रमश: कविवर निराला के कृतित्व के प्रति मेरी लालसा बलवती होती गई और जैसे जैसे मेरे अध्ययन का क्षेत्र हिन्दी साहित्य से जुड़ता गया। वैसे वैसे निराला जी की रचनायें हर स्तर पर मुझे अन्तस् तक स्पर्श करती गई। मैं संगीत की छात्रा भी रही हूं और इस दृष्टि से भी निराला जी की गेय रचनाओं ने मुझे अपनी ओर विशेष रूप से आकर्षित किया। सम्भवत: मेरे मन के किसी कोने में यह मौन संकल्प दृढ़ सा हो गया कि मैं भी कभी निराला जी के सुन्दर, मधुर, गेय गीतों का सर्वांग रूप से अनुशीलन कर सकूं।

अध्ययन में रुचि होने के कारण स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् भी मेरे पठन पाठन का क्रम निरन्तर चलता रहा। अन्तत: मन में शोधकार्य करने की लालसा अति बलवती हो गई और जब वह दृढ़ संकल्प के रूप में मेरे सम्मुख उपस्थित हुई तो मैंने भी निराला जी के गीतों पर ही शोधकार्य करने का निश्चय कर लिया। महाप्राण निराला के काव्य और कथा-साहित्य के विभिन्न पक्षों और आयामों को लेकर कई शोधार्थी कार्य कर चुके थे, किन्तु सम्भवत: निराला जी के गीतों की शास्त्रीय सांगीतिक

संरचना अर्थात् महाकवि के गीतों को ताल के साथ विभिन्न राग-रागिनियों में निबद्ध कर प्रस्तुत करने का कार्य अभी तक नहीं हुआ था ।

मैंने शास्त्रीयसंगीत की स्नातकोत्तर परीक्षा खैरागढ़ विश्वविद्यालय (मध्यप्रदेश) से उत्तीर्ण की है । अतः मैंने विचार किया कि निराला जी के गेय-गीतों को यदि शास्त्रीय-संगीत के राग-रागिनियों में निबद्ध किया जाये तो उनके गीत बहुत ही सौम्य, उदात्त एवं प्रभावशाली प्रतीत होंगे । अतएव मैंने इस अछूते विषय पर कार्य करने की जिज्ञासा डॉ० प्रेमलता बाफना (रीडर, हिन्दी विभाग) के समक्ष प्रस्तुत की । उन्होंने निराला जी के सन्दर्भ में इस विषय की महत्ता बतलाकर शोधकार्य करने के लिये प्रोत्साहित किया । साथ ही उन्होंने सामग्री संकलन की अनेक कठिनाइयों से भी अवगत कराया लेकिन मैंने उन सभी कठिनाइयों को चुनौती के रूप में स्वीकार कर लिया और अति दृढ़ संकल्प के साथ इस शोधकार्य के लिये प्रस्तुत हो गई । लगभग आठ महीने तक प्रारम्भिक कार्य करने के पश्चात् ही मेरा विषय पंजीकृत हो सका ।

आधुनिक हिन्दी-साहित्य में निराला जी विद्रोह, क्रांति और परिवर्तन के कवि माने जाते हैं । विरोध और संघर्ष को स्वीकार कर अपनी काव्यधारा को नवीन मार्ग से प्रवाहित करने की क्षमता और सामर्थ्य जैसे निराला में है वैसी हिन्दी के किसी अन्य कवि में नहीं है । कदाचित् उनकी इस दुर्द्धर्ष क्षमता के कारण ही उन्हें महाप्राण कहा जाता है । युगांतरकारी साहित्य-सृजन की प्रेरणा से निराला जी ने साहित्य के विविध रूपों को ग्रहण किया है । गद्य और पद्य दोनों ही क्षेत्रों में उनके द्वारा जो प्रयोग किए गए हैं, वे ऐसे हैं जिनका महत्व आंकना सरल कार्य नहीं है ।

महाकवि युगदृष्टा हुआ करते हैं, उनकी रचनाओं को किसी काल विशेष में नहीं बांधा जा सकता । उनकी महान कृतियाँ सार्वकालिक एवं

सार्वभौमिक हुआ करती हैं। निराला जी ने किसी एक विशेष विषय पर कविता नहीं की, वरन् अनेकानेक विषयों को लेकर काव्य रचना की है। निराला जी ने मुक्ति के सुमधुर गीत गाये, भक्ति के अनूठे राग अलापे, प्रेम संगीत गुनगुनाया, विरह वीणा के तार झंकृत किये, नारी सौन्दर्य का गुणगान किया, देश प्रेम के गीत रचे, उपेक्षित मानव के लिये गान लिखे। संक्षेप में उनकी रचनाओं को किसी एक विशेष वाद में बांधा नहीं जा सकता। उन्होंने रहस्यवादी कवितायें लिखीं, छायावाद को सुशोभित किया, प्रगतिवाद का नारा बुलन्द किया, इतना ही नहीं, उनकी कुछ रचनाओं को प्रयोगवाद की भी संज्ञा दी जाती है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि वे अपूर्व प्रतिभा सम्पन्न कवि शिरोमणि थे।

यह सर्वविदित है कि महाकवि निराला स्वयं एक संगीत मर्मज्ञ थे। उन्हें संगीतशास्त्र का गहन ज्ञान था। 'गीतिका' की भूमिका में काव्य और संगीत के संबंध में जो गहन गंभीर विचार महाकवि ने अभिव्यक्त किये हैं और जिन राग-रागिनियों का परिचय प्रस्तुत करते हुए अपने गीतों से उदाहरण दिये हैं उन्हें देखने पर इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है। निराला जी ने विभिन्न राग-रागिनियों में गीतों की रचना की है परन्तु रागों का चयन गायक की इच्छा पर छोड़ दिया है। गीतों में ताल भी प्रायः वही प्रयुक्त हैं जो सर्वाधिक लोक प्रचलित हैं। 'गीतिका' की भूमिका में निराला जी ने धमार, रूपक, झपताल, चौताल, तीन-ताल तथा दादरा तालों का उल्लेख किया है। संगीत-शास्त्र में जिन तालों और रागों का उल्लेख है उन सबके आधार पर निराला जी के गीत खरे उतरते हैं। निराला जी ने गीतिका के अतिरिक्त अर्चना, आराधना तथा गीतगुंज आदि रचनाओं के गीतों की रचना भी सांगीतिक तत्वों को ध्यान में रखकर की है।

संगीत पारखी होने के साथ निराला जी स्वयं एक अच्छे संगीतज्ञ भी थे। उनके मुक्त छंद की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि इसमें स्वतंत्र संगीत

की एक तरल धारा अन्त: सलिला की भाँति प्रवाहित होती रहती है जो उसे लयबद्ध कविता का सुन्दर और प्रभावशाली रुप प्रदान करती है। छंदशास्त्र में विभिन्न नवीन प्रयोग करने वाले निराला जी को ताल से स्वाभाविक प्रेम था। मुक्त छंद की रचनाओं की नाटकीयता, स्वर का उत्थान पतन और उसके सहज प्रभाव द्वारा भाव प्रदर्शन करना उनके काव्य साहित्य की विशेषतायें हैं। चाहे "जुही की कली" के समान सौंदर्य प्रधान रचना हो, चाहे "समर में अमर कर प्राण" जैसी वीरतापूर्ण कविता हो, अपने उदात्त और मंद स्वरों से भाव-सौन्दर्य को समान रुप से प्रकट कर सकते हैं। जिन लोगों को महाकवि निराला के सम्पर्क में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ है, उनकी मान्यता है कि निराला जी की कविता उन्हीं के मुखमण्डल से सुनने पर जितना प्रभावित करती थी उतनी स्वयं पढ़ने पर नहीं करती। वे अपनी स्वरलहरी से जनता में आल्हाद, शोक, स्नेह, माधुर्य, हास-विलास, अट्टहास और रौद्रगर्जन आदि सभी का प्रसार कर सकते थे। निष्कर्ष रुप से यही कहा जा सकता है कि महाकवि निराला का काव्य और संगीत दोनों पर अबाध अधिकार था।

निराला जी आधुनिक हिन्दी-काव्य के संगीत सम्राट हैं। निराला जी आधुनिक कवियों में सांगीतिक दृष्टिकोण से एक अद्भुत एवं नवीन प्रयोग के कारण सर्वोपरि हैं। निराला जी का संगीत जन्मजात अलंकार है और यही कारण है कि उन्होंने अपने गीतों को स्वरबद्ध एवं तालबद्ध करने का सफल प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में निराला जी के काव्य में संगीत के विविध पक्षों को उजागर करने का तुच्छ प्रयास किया गया है। निराला जी के काव्य में संगीत विषयक शब्दावली, राग ज्ञान, वाद्य यन्त्रों का परिचय पाने से निराला जी के संगीत ज्ञान का पता चलता है। निराला जी को लोक-संगीत के प्रति भी लगाव था

औरइसीलिए उन्होंने अपने काव्य में लोक धुनों तथा लोक गीतों का समावेश किया है ।

ललित कलाओं में काव्य एवं संगीत दोनों का गहन सम्बन्ध है । दोनों ही कलाओं में मधुरता, सुन्दरता तथा आकर्षण है और ये दोनों कलाएँ गतिशील कलाएँ हैं और दोनों ही कर्णेन्द्रियों के माध्यम से आनन्द की अनुभूति कराती हैं ।

जिस तरह काव्य में संगीत तत्व आवश्यक है उसी तरह कण्ठ संगीत में काव्य तत्व का होना आवश्यक है । वैसे भी संगीत के प्रारम्भिक रूपों का काव्य से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है । छन्द प्रयोग में, शब्द विन्यास में संगीत को काव्य तत्वों का आश्रय ग्रहण करना पड़ता है । काव्य तत्वों के प्रयोग से संगीत का अर्थ स्वयं विश्लेषित हो उठता है । संगीत का मूल आधार नाद है, उसकी रमणीयता के साथ ही संगीत की उत्कृष्टता प्रतिपादित होती है और यह शब्द प्रयोग से ही सम्भव होता है, इसलिए यदि संगीत में से काव्य तत्व निष्कासित कर दिया जाये तो संगीत मात्र आलाप प्रलाप के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहेगा, इसीलिए संगीतज्ञ भी संगीत में काव्य के महत्व को स्वीकार करते हैं । इस प्रकार काव्य और संगीत दोनों में ऐसे अनेक तत्व विद्यमान हैं, जिनके कारण काव्य और संगीत दोनों में पारस्परिक संबंध बना हुआ है । अतः यह कहा जा सकता है कि काव्य और संगीत का अटूट सम्बन्ध है । काव्य के बिना संगीत और संगीत के बिना काव्य अधूरे हैं क्योंकि काव्य की पूर्ति संगीत से और संगीत की पूर्ति काव्य से ही सम्भव हो सकती है यह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं । जहाँ एक की प्रतिष्ठा होती है वहां दूसरा अपने आप उपस्थित हो जाता है । काव्य यदि दीपक है तो संगीत उसकी ज्योति है । काव्य

यदि शरीर है तो संगीत उसकी आत्मा है अर्थात् दोनों का मूल रूप एक ही है। दोनों एकही स्त्रोत से बहने वाली दो अलग अलग स्त्रोतस्विनियाँ हैं।

काव्य को संगीत के तथा संगीत को काव्य के निकट लाने का श्रेय निराला जी को भी है। महाकवि ने दोनों का सामंजस्य करके आधुनिक हिन्दी-साहित्य को "गीतिका" नामक पुस्तक उपहार में दी है जो इसका ज्वलन्त उदाहरण है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "निराला" काव्य में संगीत में, मैंने निराला जी के काव्य में संगीतात्मक तत्वों को खोजकर उनके गीतों को स्वरलिपिबद्ध एवं स्वरांकित करने का प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य के अधिकांश विद्वानों ने निराला जी के काव्य के दोनों पक्षों - भाव तथा शिल्प की विस्तारपूर्वक विवेचना की है, किन्तु उनके काव्य-सलिल में प्रवाहित संगीत कला का विशद विवेचन प्रायः नहीं के बराबर ही हुवा है। महाकवि की रचनाओं में संगीत तत्व ओस कणों की भांति सर्वत्र दर्शनीय हैं, किन्तु काव्य-परम्परा में संगीत के शास्त्रीय एवं लोक सिद्धान्तों को व्यावहारिक धरातल पर खोजकर निराला काव्य को संगीत के वैभव से पूर्ण सिद्ध करना एक अत्यन्त दुष्कर कार्य है। इसी दुष्कर कार्य को अभिनव प्रयास के रूप में मैंने अपने इस शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत किया है।

निराला जी के काव्य गीतों में स्थित भावनाओं के अनुरूप राग-रागिनियों का संबंध स्थापित किया गया है। साथ ही शब्द रचना से उत्पन्न छन्दानुरूप ताल व्यवस्था भी की गई है। इस प्रकार संगीत की एक स्पष्ट तथा ठोस पृष्ठ भूमि महाकवि के काव्य में निहित संगीत तत्वों को देखते हुए तैयार की गई है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को अनुशीलन की दृष्टि से सात अध्यायों में विभाजित किया गया है ।

प्रथम अध्याय - महाकवि निराला के जीवनवृत्त से संबंधित है । जिसमें अपेक्षित रूप से महाकवि के जीवन चक्र को विश्लेषित करने का प्रयत्न किया गया है । इसी अध्याय में महाप्राण ' निराला ' के अजेय व्यक्तित्व को भी व्याख्यायित करने की चेष्टा की गई है तथा निराला जी के कृतित्व का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है अर्थात् ' परिमल ' से लेकर ' सांध्यकाकली ' तक की महाकवि की विशाल काव्य-यात्रा का एक आलेख प्रस्तुत किया गया है ।

द्वितीय अध्याय - गीति काव्य के स्वरूप और विकास को लेकर लिखा गया है । प्रारम्भ में ' गीत ' तथा ' गीति ' शब्द का अर्थ स्पष्ट करने का यथासाध्य प्रयास किया गया है । गीति काव्य की भारतीय एवं पश्चिमी विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई परिभाषाओं की चर्चा करते हुए उसके स्वरूप को प्रकाशित किया गया है । उसके साथ ही गीतिकाव्य के तत्वों का उल्लेख करते हुए भारतीय एवं पश्चिमी गीति काव्य की परम्परा को भी उद्घाटित किया गया है । अन्त में गीति काव्य के क्षेत्र में निराला जी के महत्वपूर्ण योगदान को अंकित करने का प्रयास किया गया है ।

तृतीय अध्याय - में काव्य और संगीत के पारस्परिक संबंध पर विचार किया गया है । विभिन्न परिभाषाओं की चर्चा करते हुए ललित कलाओं का विवेचन किया गया है । विशेष रूप से वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत कला एवं काव्य कला पर प्रकाश डाला गया है । काव्य और अन्य कलाओं का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए काव्य और संगीत के समान तत्वों पर विचार किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय - में निराला जी की सांगीतिक-मान्यताएँ तथा निराला काव्य में संगीत तत्वों को खोजने का प्रयास किया गया है ।

निराला जी का रागों का विस्तृत ज्ञान को देखते हुए उनके काव्य में वाद्य यन्त्रों का कहां कहां उपयोग हुआ है इस पर दृष्टि डाली गई है । तत्पश्चात् निराला जी का नृत्य सम्बन्धी ज्ञान तथा उनके काव्य में लोक संगीत तथा लय और ताल को स्पष्ट करने का यथा साध्य प्रयास किया गया है ।

पंचम अध्याय - में निराला जी के गीतों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है । महाकवि " निराला " के गीतों को विषय वस्तु की दृष्टि से प्रेम और श्रृंगार के गीत, प्रकृति सम्बन्धी गीत, मानवतावादी गीत, शोक गीत, प्रगतिशील तथा प्रयोगशील गीत, आत्मपरक गीत, राष्ट्रीय गीत, रहस्यवादी गीत, भक्ति प्रधान और विनय के गीत, हास्य एवं व्यंग्य गीत, स्फुट गीत आदि का विवेचन किया गया है । रस की दृष्टि से श्रृंगार, वीर, करुण, हास्य, रौद्र, वीभत्स, अद्भुत, भयानक तथा शांत अर्थात् काव्य के नौ रसों में गीतों को वर्गीकृत करने का प्रयास किया गया है ।

षष्ठम अध्याय - में गीतों की स्वरलिपियाँ प्रस्तुत की गई है । महाकवि " निराला " के गीतों को शास्त्रीय-संगीत के आधार पर विभिन्न राग-रागिनियों में निबद्ध कर, ताल तथा स्वरों से सुसज्जित किया गया है । प्रत्येक कविता के भावार्थ के आधार पर ही राग का चयन किया गया है । तथा रागानुसार ही उन्हें ताल में निबद्ध किया गया है । निराला जी के लगभग चालीस प्रमुख गीतों तथा गज़लों को शास्त्रीय संगीत की संरचना में ढाल कर प्रस्तुत किया गया है । हमारे इस शोध प्रबन्ध का प्रमुख उद्देश्य भी यही है ।

सप्तम अध्याय - उपसंहार का है । इसमें संगीत कला की दृष्टि से महाकवि निराला की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है । सांगीतिक कसौटी पर निराला जी के गीतों को निरख-परख कर यह स्पष्ट

किया गया है कि निराला जी का काव्य संगीतात्मक दृष्टि से अत्यन्त सफल, समृद्ध एवं सम्पन्न काव्य है। निराला जी के मुक्त-छंद की कविताओं पर विचार करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि आंतरिक लय के आधार पर इनका सस्वर पाठ किया जा सकता है, किन्तु गीतों की तरह विभिन्न राग-रागिनियों तथा तालों में इन्हें निबद्ध नहीं किया जा सकता है। निष्कर्ष रूप से यही कहा जा सकता है कि महाकवि निराला एक महान कवि-संगीतज्ञ हैं तथा उनके गीतों में काव्य और संगीत का अद्भुत एवं अपूर्व समन्वय परिलक्षित होता है।

इस शोध प्रबन्ध के लेखन क्रम में मैंने अनेक विद्वानों के महत्वपूर्ण ग्रन्थों से सहायता प्राप्त की है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं से भी मैंने पर्याप्त सहायता ली है। उन सभी के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं। मैं उन सब महानुभावों के प्रति भी अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मुझे इस शोध कार्य में सहयोग तथा प्रोत्साहन दिया है। मैं विशेष रूप से पूज्यवर आचार्य विश्वनाथ गवान्डे (संप्रति - अध्यक्ष संगीत विभाग, कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश) के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं, जिनके योग्य निर्देशन में मैंने निराला जी के गीतों की स्वरलिपियों के निर्माण का कार्य सम्पन्न किया है। उनके आत्मीय सहयोग के बिना इस दुष्कर किन्तु महत्वपूर्ण कार्य को कर पाना मेरे लिये सम्भव न था।

मेरे पति श्री दिलीप बाबर का आत्मीय सहयोग और उनकी अदम्य प्रेरणा ने निरन्तर मेरा उत्साह बढ़ाया है। अनेक पारिवारिक कष्टों एवं व्यवधानों के बावजूद भी उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया और यह महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कराया। मैं उनके प्रति श्रद्धावनत हूँ।

अन्त में, मैं इस शोध प्रबन्ध की निर्देशिका आदरणीय डा० प्रेमलता जी बाफना (रीडर, हिन्दी विभाग, कला-संकाय) के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं। उनके स्नेह और सहयोग को मैं शब्दों के द्वारा व्यक्त करने में अपने को असमर्थ पाती हूं, उसे मैं केवल आत्मानुभूत ही कर सकती हूं।

इस शोध प्रबन्ध को मैंने यथा साध्य प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, फिर भी यदि कहीं त्रुटियां दृष्टिगत हों तो उसे मेरे अज्ञान का ही परिणाम मानकर सुधीजन क्षमा करें। एव मस्तु।

(श्रीमती रागिनी बाबर)